हिन्दी प्रतिष्ठा (द्वितीय पत्र)

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Date :

हिन्दी
बी०ए० (प्रतिष्ठा)
खण्ड (PART-I/ Paper-II)

डा० संतोष कुमार
सहायक प्राचार्य, (हिन्दी विभाग)
भारती मंडल महाविद्यालय,
रहिका, मधुबनी।

पाठ्य विषय :- विद्यापति पदावली
(पद सं० - 207)

संबंधित पुस्तक :- विद्यापती की पदावली - सं० रामवृक्ष बेनीपुरी पद सं० 193 से 217 तक

सप्रसंग व्याख्या :- पद सं० 207 ⇒ प्रश्न सं० - 01
अंक - 15

" बिपत अपत तरु पाओल रे पुन नव नव पात।
बिरहिनि-नयन बिहल बिहि रे, आबिरल बरिसात ।।
सारिल अंतर बिरहानल रे, नित बाढ़ल जाए।
बिनु हरि लाख उपचारहु रे, हिअ दुख न मेटाए ॥
पिया पिया रटए पपिहरा रे, हिअ दुख उपजाब।
कुदिना हित जन अनहित रे, धिक जगत सोभाब ।।
कवि विद्यापति गाओल रे, दुख मेटत तोर।
हरखित चित तोहि भेटत रे, पिअ नन्दकिसोर ।।

शब्दार्थ :- बिपत = विपत्ति, अपत तरु = पत्रहीन वृक्ष, पाओल = प्राप्त किये, बिहल = विधान किया, बनाया, बिहि = विधाता, ब्रह्मा आबिरल = लगातार, अंतर = हृदय, बिरहानल = विरह रूपी अग्नि, हिअ = हृदय, कुदिना = खराब दिन, अनहित = शत्रु, सोभाब = स्वभाव, धिक = है, ~~मेटत~~ मेटत = मिटेगा

भावार्थ :-

प्रस्तुत पंक्ति महाकवि विद्यापति की पदावली से ली गयी है। यह एक विरह संबंधी पद हैं। इसमें नायिका की विरह दशा को व्यक्त करने के लिए महाकवि विद्यापति ने प्रकृति को माध्यम बनाया हैं। साथ ही सामाजिक परिपेक्ष्य में भी

Scanned with CamScanner

Date :

नायिका के मनोदशा को चित्रित किया गया है।

विरहिणी नायिका (राधा) श्रीकृष्ण के वियोग में कहती है कि बिना पत्ते के श्रीहीन विपत्ति रूपी वृक्ष में पुनः नए-नए पत्ते लग गए हैं। विपत्ति का वृक्ष जो सूख चला था, अर्थात् विरह जो पुराना हो जाने के कारण कम दुःख देता था। अब, वर्षा ऋतु के कारण पुनः लहलहा उठा है अर्थात् नवीन नायिका की हृदय की विरह की पीड़ा पुनः जाग्रत हो गयी है। जैसे उसकी (विरहिनी) की आँखों में विधाता द्वारा अविरल बरसात बसा दी गई है।

आगे वह अपनी सखि से कहती है, हे सखि। हृदय में स्थित विरह की अग्नि अनवरत बढ़ती ही जा रही है। इस हृदय की पीड़ा का एक मात्र ~~उपाय~~ उपचार श्रीकृष्ण ही हैं, जिनके मिलन से पीड़ा मिट सकती है अन्यथा नहीं।

साथ ही पपीहे का 'पिउ-पिउ' उसे सुखद नहीं लगता। वह उसके हृदय में और भी दुःख उत्पन्न करता है। साथ ही महाकवि सामाजिक लोक व्यवहार की ओर इशारा करते हुए कहते हैं कि संसार का यह स्वभाव है कि दुर्दिन में अपने भी शत्रुवत् व्यवहार करने लगते हैं।

विद्यापति कहते हैं कि हे विरहिणी तुम्हारा दुःख अवश्य मिटेगा। तुमसे प्रसन्नचित्त होकर प्रभु नन्दकिशोर कृष्ण अवश्य मिलेंगे।

Teacher's Signature :

Scanned with CamScanner